(1)

चंद्रहासन 'मास्टर'

एन० वी० कृष्ण वारियर

स्वर्गीय प्रो० चंद्रहासन जी से मेरा संपर्क 1933 से शुरू होता है। उन दिनों मैं तृप्पूणित्तुरा के संस्कृत कॉलेज में पढ़ता था और चंद्रहासन जी—हम उन्हें 'मास्टर' कहते थे—एरणाकुलम के महाराजास कॉलेज में हिंदी के अध्यापक थे। कॉलेज के काम के अलावा, उन दिनों कोचीन रियासत में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का कार्यभार भी, बहुत बड़ी हद तक, उनकी देखरेख में चल रहा था। हिंदी का अध्ययन-अध्यापन राष्ट्र सेवा का अभिन्न अंग था, और राष्ट्र सेवा समझ कर हम संस्कृत कालेज के कुछ विद्यार्थी प्राइवेट तौर पर हिंदी पढ़ने लगे। हमारे एक सहपाठी श्री ता० वी० परमेश्वरय्यर असहयोग आंदोलन में जेल जा चुके थे और हिंदी का अच्छा ज्ञान उन्हें हासिल था। वे हमारे प्रथम हिंदी अध्यापक बने। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की परीक्षाएँ उन दिनों एरणाकुलम में होती थीं और परीक्षाओं का संचालन प्रायः 'मास्टर' जी के हाथों में था। हम परीक्षार्थियों को बढ़ावा देने में 'मास्टर' जी हमेशा जागरूक थे। माननीय नेता, कर्मठ कार्यकर्ता, वरिष्ठ अध्यापक और प्रगाढ़ पंडित की हैसियत से उनकी कीर्ति उन दिनों भी काफ़ी फैल चुकी थी। भारतीय साहित्य परिषद् के मुख पत्र के रूप में 'हंस' का संचालन करने में स्वर्गीय प्रेमचंद की सहायता प्रायः उन्हीं दिनों वे करते थे। यह सब होने पर भी हम विद्यार्थियों से वे बड़ी उदारता एवं सहृदयता से मिलते और हर एक से वैयक्तिक संबंध रखते। हिंदी की पुस्तकें और पत्रिकाएँ तब केरल में मुश्किल से मिलती थीं। चंद्रहासन जी के बहनोई श्री नारायणन नायर, जिन्होंने अपना सारा

जीवन हिंदी की सेवा में बिताया, एक छोटा हिंदी पुस्तकालय एरणाकुलम में चलाते थे। वहाँ से एक पुस्तक उधार लेने के लिए सात मील उधर और सात मील वापस चलना हमारे लिए एक साधारण बात थी।

1936 में जब संस्कृत कालेज की मेरी पढ़ाई पूरी हुई तब 'मास्टर' जी ने बताया कि हिंदी में उच्च शिक्षा के लिए वे मुझे बनारस भेजेंगे। निजी कारणों से यह सहायता मैं स्वीकार नहीं कर सका। फिर भी हिंदी प्रचार से और उसके द्वारा 'मास्टर' जी से मेरा संपर्क बना रहा।

अगस्त, 1942 की क्रांति के समय मैं कालटि के संस्कृत हाईस्कूल में प्रधानाध्यापक था। इस पद से मैंने इस्तीफा दे दिया और आंदोलन में शामिल होने तृश्शिवपेरूर (Trich r) चला गया। स्वर्गीय डॉ० के० बी० मेनोन के नेतृत्व में एक ग्रुप उन दिनों गुप्त रूप से केरल में सक्रिय था और अच्युत पटवर्धन आदि वाम पक्ष के नेताओं से उनका संपर्क था। 'स्वतंत्र भारत' नाम की एक अंडर ग्राउंड पत्रिका चलाने का इस ग्रुप ने निश्चय किया, और इस काम में योगदान करने के लिए 'मास्टर' जी की सिफारिश के बल पर मैं नियुक्त हुआ। जब 'स्वतंत्र भारत' के कुछ अंक निकले तब पुलिस की कड़ी निगरानी के कारण पत्रिका छपवाना असाध्य हो गया और अपना एक छोटा-सा अंडर ग्राउंड प्रेस बनाने का हमने निश्चय किया। कंपोजिंग आदि प्रेस के काम सीखने के लिए मैं नियुक्त हुआ। 'मास्टर' जी की कृपा से एरणाकुलम के एक अच्छे प्रेस में अप्रेंटिस के रूप में मैंने प्रवेश पाया। उन दिनों मैं उन्हीं के घर रहता था। वे थे एक सरकारी कॉलेज के प्रोफेसर और मैं ठहरा एक क्रांतिकारी ग्रुप का, जिसके लगभग सारे अंग जल्दी सनसनीदार 'कीषरियूर' बम केस में फंस जाने वाले थे, एक सक्रिय अंग! तिस पर भी मुझे अपने घर पर ठहराने का जोखिम उन्होंने उठाया। हमारा हैंड प्रेस पुलिस के हाथ में चला गया और मेरा अप्रेंटिसशिप उस समय कुछ काम न आया, यह अलग विषय है।

1956 में 'मातृ भूमि' संस्था से मेरे संपादकत्व में 'युगप्रभात' नामक हिंदी पाक्षिक निकलने लगा। बारह साल तक मैं इसका संपादक रहा और उन बारह सालों में 'मास्टर' जी के स्नेहपूर्ण उपदेशों और सक्रिय सहयोग का मैं लाभ उठाता रहा। अब भी श्री रविवर्मा के सुयोग्य संपादकत्व में 'युगप्रभात' उत्तर और दक्षिण की संस्कृतियों को मिलाने की कड़ी का काम निभाता आता है। 1968 में जब केरल भाषा संस्थान (State Institute of Languages, Kerala) का निर्माण हुआ और मैं इस संस्थान का निदेशक नियुक्त हुआ, तब इस संस्थान के काम में भी, जो बहुत बड़ी हद तक हिंदी निदेशालय और शब्दावली आयोग से संबद्ध रहा, उनका बहुमूल्य सहयोग मुझे मिलता रहा।

करीब एक साल पहले एरणाकुलम से दिल्ली जाते वक्त 'मास्टर' जी तिरुवनंतपुरम के हवाई अड्डे पर बीस मिनट रुके। उनका पत्र पाकर मैं वहाँ जाकर उनसे मिला। 'मास्टर' जी का स्वास्थ्य इतना खराब था कि वे विमान से नहीं उतरे। हिंदी और

इतर भारतीय भाषाओं को परस्पर मिलाने के लिए कई द्विभाषी कोष तैयार करने के बारे में हमारी चर्चा चली। तबियत बिगड़े या सुधरे, उनका मन हमेशा कर्मरत रहा और सेवा के नए-नए मार्गों के आयोजन में वे हमेशा सक्रिय रहे।

'मास्टर' जी की स्मृति करते समय उनकी पत्नी का सौम्य स्निग्ध रूप मेरी आँखों के सामने स्पष्ट हो आता है। पति के सब कामों में पत्नी का भी सक्रिय सहयोग रहा। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (केरल) के ट्रस्टी के तौर पर हिंदी प्रचार आंदोलन की बहुमूल्य सेवा श्रीमती चंद्रहासन ने की है। 'मास्टर' जी के कुटुंब के सभी अंगों ने हिंदी प्रचार को अपना ध्येय बनाया है, उनका सारा परिवार ही 'हिंदी परिवार' है।

'मास्टर' जी अब नहीं रहे, उनकी कीर्ति अमर रहे ! *

केरल में हिन्दी विरोधी आन्दोलन किसने उकसाया ?

केरल में मलयालम को तुरन्त प्रशासनिक भाषा बनाया जाय !

• एन. वी. कृष्णवारियर

(सम्पादक 'युग प्रभात', हिन्दी पाक्षिक और 'मातृभूमि' साप्ताहिक, केरल)

★

अभी, जब मैं इन पंक्तियोंको लिख रहा हूं, हमारे शहरमें एक 'हिन्दी विरोधी सम्मेलन' हो रहा है। उत्तेजित विद्यार्थी उसमें हाथ-पैर हिला-हिलाकर बोल रहे हैं। और जो बोल नहीं रहे हैं, वे बीच-बीचमें तालियां पीट रहे हैं और अट्टहास कर रहे हैं। अभी आधा घण्टा पहले उनका एक बड़ा जुलूस हमारे इस कार्यालयके नीचेसे गुजरा। शहरके मेडिकल कालेज और इंजीनियरिंग कालेजके लगभग तमाम विद्यार्थी उसमें थे। इनके अलावा, शहरके चार कला महाविद्यालयों के अधिकांश विद्यार्थी और एक महिला कालेजकी कुछ छात्राएं भी उस जुलूसमें शामिल थीं।

जुलूसके नारे अधिकांश अंग्रेजीमें थे। "अप-अप इंग्लिश", "डाउन-डाउन हिन्दी" (अंग्रेजी जिन्दाबाद, हिन्दी मुर्दाबाद)- "लेट डॉग्स बार्क हिन्दी, वी विल स्पीक इंग्लिश" (कुत्ते हिन्दी भूंका करें, हम अंग्रेजी बोलेंगे) "बैन हिन्दी फॉर नेशनल इण्टीग्रेशन" (राष्ट्रीय एकताके लिए हिन्दीपर प्रतिबन्ध लगाओ)—ऐसे ही नारे तख्तियोंपर लिखे हुए थे और जुलूसमें इनका शोर गूंज रहा था। इसके अलावा, शहरमें कई जगह इस आशयके पोस्टर भी चिपकाये गये थे, तथा शहरी बसोंपर भी ऐसे पोस्टर लगे हुए थे।

केरलके इस दूसरे बड़े शहर कालिकटमें हिन्दीके विरुद्ध ऐसा प्रदर्शन आज (१७ फरवरी, १९६५ को) पहली बार हुआ है। इसके पहले भी गत सप्ताहमें एक-दो बार यहांके इंजीनियरिंग कालेजके कुछ विद्यार्थियोंने पढ़ाईका बहिष्कार किया था; लेकिन वह उसी कालेज तक सीमित रहा। लेकिन आजके प्रदर्शनने व्यापक रूप धारण किया। यद्यपि आम जनता अब भी इसमें नहीं है, तथापि आन्दोलनकी गति चिन्ताजनक है।

इसके पहले मैं इस बातकी कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था कि हमारे शहरोंकी सड़कोंपर एक दिन अंग्रेजी जिन्दाबादका नारा भी गूंजेगा। यह तो ठीक है कि बातें कुछ इसी दिशामें जा रही थीं, और वह भी पिछले कई सालोंसे। फिर भी केरलमें भाषाके सम्बन्धमें कोई बड़ी उत्तेजना इसके पहले कभी नहीं हुई।

केरल निर्माणके पूर्व यह प्रदेश तीन खण्डोंमें बंटा हुआ था। दो खण्ड तो देशी रियासतोंके थे, और एक खण्ड बहु-भाषाभाषी मद्रास प्रान्तका एक अंग था। जब भाषावार प्रान्तोंके निर्माणकी चर्चा चल रही थी तब, और उसके कुछ पहले भी, केरलके तीन खण्डोंको जोड़कर एक 'ऐक्य केरलम्' प्रान्त बनानेके लिए एक आन्दोलन यहां चला था। लेकिन वह एक संयोजनका प्रश्न अधिक था, वियोजनका प्रश्न कम। इस आन्दोलनमें तनावका सर्वथा अभाव था।

केरलके लोग भाषाएं सीखनेमें जन्मसे ही चतुर होते हैं। उनकी भाषा मलयालम द्रविड़ गोत्रकी है; लेकिन उसके लिखित रूपमें करीब नब्बे प्रतिशत संस्कृतके शब्द हैं। संस्कृत का यहां बड़ा प्रचार हुआ, और वह सदियों तक चला। इसलिए उत्तर भारतकी किसी भी भाषाको, जो संस्कृतसे निष्पन्न है, सीखनेमें केरलके लोग आम तौरपर कठिनाई महसूस नहीं करते। गत तीस-पैंतीस सालसे केरलमें हिन्दी-प्रचार का अच्छा कार्य हुआ है। हिन्दी अब स्कूलोंमें पांचवीं कक्षा से लेकर अनिवार्य रूपसे पढ़ायी जाती है और एस. एस. एल. सी. (माध्यमिक शिक्षाकी अन्तिम परीक्षा) पास करनेके लिए हिन्दीमें परीक्षा देना लाजिमी है। इस व्यवस्थाका अब तक कहीं भी विरोध नहीं हुआ। कालेजोंमें तो हिन्दी दूसरी भाषाकी जगह पढ़ायी जाती है। यहां मलयालमसे उसकी सीधी टक्कर है; यानी विद्यार्थियोंको हिन्दी, मलयालम, संस्कृत आदि भाषाओंमेंसे अन्यतमको चुन लेना पड़ता है। लेकिन यहां भी हिन्दीके प्रति कोई विरोध नहीं नजर आता; बल्कि जितने विद्यार्थी मलयालमको चुनते हैं, उससे दुगुने विद्यार्थी हिन्दीको चुन लेते हैं।

अगर हालत यह है, तो अब हिन्दीके खिलाफ यह आन्दोलन क्यों? क्यों हमारे शहरोंकी सड़कोंमें हिन्दीके खिलाफ जुलूस निकलते हैं और क्यों "हिन्दीपर प्रतिबन्ध लगाओ" जैसे असंगत नारे दोहराये जाते हैं?

इसका कारण है। और इस कारणके बारेमें हमको सचेत होना ही होगा। नहीं तो जो आजादी हमें बड़ी कठिनाईसे मिली है, उससे हमें बहुत जल्दी ही हाथ धोना पड़ेगा। राष्ट्रकी भलाई चाहनेवाले सब लोगोंका ध्यान मैं इस ओर आकृष्ट करना चाहता हूं।

केरलमें हिन्दीके प्रति विरोधकी भावना है अवश्य, परन्तु उसी वर्गमें जो भारतके अन्य प्रदेशों, यहां तक कि हिन्दी-भाषी प्रदेशोंमें भी, हिन्दीका विरोधी है। यह विरोध अभी तक केरलकी आम जनताके हृदयमें पैठ नहीं सका, जैसा कि मद्रासमें वह कुछ हद तक साधारण जनताके दिलमें प्रवेश कर सका। केरलमें अब भी यह विरोध यहांकी अंग्रेजी-शिक्षित नौकरशाही एवं 'भद्र लोगों' तक ही सीमित है। हां, आम जनताको भुलावेमें डालनेके लिए कोशिशें हो रही हैं, और उन कोशिशोंका असर भी जहां-तहां प्रकट होने लगा है।

केरलमें अब भी प्रशासनकी भाषा अंग्रेजी ही है। मलयालमको प्रशासनकी भाषा बनानेके लिए अभी तक कोई प्रयत्न नहीं हुआ है। जब कम्युनिस्ट पार्टीका यहां मन्त्रिमण्डल बना, तब इसके लिए एक समिति बनी और उसकी रिपोर्ट भी प्रकाशित की गयी। लेकिन उस रिपोर्टकी कोई भी सिफारिश अमलमें नहीं लायी गयी। और तो और २६ जनवरी, १९६५ के बाद भी यहांका प्रशासन अंग्रेजीमें ही चलानेका एक अध्यादेश गत महीनेमें राष्ट्रपतिने जारी किया है। फलस्वरूप छोटी-छोटी ग्रामपंचायतोंमें भी प्रशासनका काम ज्यादातर अंग्रेजीमें होता है, जिसे बहुत कम लोग समझ पाते हैं।

शिक्षाके महत्वके प्रति केरलकी जनता बहुत सजग है। कई सालोंसे शिक्षाके स्तरके गिर जानेकी बात यहां दुहरायी जाती रही है, जो बहुत अंशोंमें ठीक भी है। **लेकिन जब अफसर लोग और नेता-गण 'स्तर' के बारेमें बोलते हैं, तब उनका मतलब अंग्रेजीके ही स्तरसे होता है।** अंग्रेजीका स्तर उठानेकी बड़ी कोशिशें की गयीं। अब प्राथमिक स्कूलों में तीसरे वर्गसे अंग्रेजी पढ़ायी जाती है। शहरोंमें ही नहीं, देहातोंमें भी, अंग्रेजी माध्यमके विद्यालय धड़ाधड़ खुलते जा रहे हैं। कालेजोंमें तो एक सालके 'प्रि-यूनिवर्सिटी कोर्स' की जगह दो सालके 'प्रि-डिग्री कोर्स' की योजना अमलमें लायी गयी है, जिसमें सारा ध्यान अंग्रेजी भाषापर ही केन्द्रित है। अंग्रेजीके अध्यापकोंका स्तर ऊपर उठानेके लिए एक इंग्लिश इंस्टिट्यूटकी भी स्थापना हुई है। **अफसर लोग और नेतागण समय-असमय अंग्रेजीकी महिमा गाते रहते हैं। यहां तक कि, गये साल तृशिवपेरूर (त्रिचूर) के केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षणालयके वार्षिक सम्मेलनके अध्यक्षके पदसे केरलके गवर्नर महोदयने जो व्याख्यान दिया उसमें हिन्दीके बारेमें एक शब्द भी नहीं था; सारेका सारा व्याख्यान अंग्रेजीका गरिमागान था।**

हिन्दी-प्रचार आन्दोलन में ढील और स्वाधीनता के बाद की राजनीति

खेदकी बात यह है कि यहां कांग्रेसका रुख भी हिन्दीके विरुद्ध है। भारतके स्वतन्त्र होनेके पहले दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार सभा केरलमें अच्छा काम करती थी। सभाके कर्मठ कार्यकर्ता जी-जानसे हिन्दी-प्रचार कार्यमें जुटे हुए थे। लेकिन आजादी हासिल होनेके बाद इस काममें ढिलाई पड़ गयी। कार्यकर्त्ताओंके बीच मन-मुटाव बढ़ता गया और केरल प्रान्तीय हिन्दी-प्रचार सभाका काम एक तरहसे बन्द ही हो गया। सभाके संचालनके बारेमें अदालतमें वाद-विवाद चला। अभी एक ही साल हुआ कि सभा इन सब विपदाओंसे बचकर ठीक रास्तेपर आ पायी है। उसका काम पूरी ताकत से अभी शुरू भी नहीं हो सका है।

गत दस-बीस सालसे कांग्रेसको हिन्दी-प्रचारके कार्यमें कोई दिलचस्पी नहीं रही। चुनाव और मन्त्रिपदकी उलझनोंमें कांग्रेसके लोग उलझे रहे। कांग्रेसमें बहुतायतसे राष्ट्रीयता-विरोधी तत्व घुस आये। अब जो हिन्दी-विरोधी आन्दोलन चल रहा है उसके पीछे ऐसे ही बहुत-से छद्मवेशी कांग्रेसी लोग दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

मद्रासमें जब हिन्दी विरोधी आन्दोलन उग्र रूप पकड़ता जा रहा था तब कांग्रेसके अध्यक्ष श्री कामराज और केन्द्रीय मन्त्री श्री संजीव रेड्डी केरलमें चुनाव-दौरा कर रहे थे। इन दोनोंने हिन्दीके सम्बन्धमें सम्मेलनोंमें कुछ ऐसी बातें कहीं, जो तनाव बढ़ानेमें बहुत काम आयीं। श्री संजीव रेड्डी ने कहा कि वे हिन्दी थोपी जानेके विरुद्ध हैं, और दक्षिण भारत अभी तक हिन्दीके लिए तैयार नहीं हुआ है।

अपनी पुत्रीका (जिसने हिन्दीमें एम. ए. किया है, लेकिन फिर भी वे कहते हैं कि वह हिन्दी पढ़-लिख और बोल नहीं सकती) उदाहरण देते हुए उन्होंने यह तक कहा कि बहुत पढ़नेपर भी दक्षिणवालोंको हिन्दी नहीं आयेगी। केरलके सब अखबारोंमें उनके भाषणका यह अंश प्रकाशित हुआ है। एरणाकुलममें बोलते हुए श्री कामराजने कहा कि अगर किसी अहिन्दी प्रान्तको सरकारके नाम केन्द्रसे हिन्दीमें कोई पत्र आये तो वह रद्दीकी टोकरीमें फेंक दे। यह भी समाचार पत्रोंमें प्रकाशित हुआ। आगे चलकर दिल्लीमें श्री कामराजने कहा कि उनकी बात ठीकसे उद्धृत नहीं की गयी है। उनसे यह पूछा जा सकता है कि दूसरे दिन केरलसे ही उन्होंने इसका खण्डन क्यों नहीं निकाला?

केरलवासियों के लिए हिन्दी कठिन क्यों है?

केरलके स्कूलोंमें हिन्दी पढ़ायी तो जाती है, लेकिन इसके लिए आवश्यक समय नहीं दिया जाता। छोटे-छोटे वर्गोंमें, जहां पहले पहल विद्यार्थी हिन्दीका मुख-दर्शन कर पाते हैं, प्रति सप्ताह दो या तीन पीरियड (सम्मिलित अवधि डेढ़ या दो घण्टे) हिन्दीको मिलते हैं। केरलमें सब पाठ्य-पुस्तकें सरकारकी ओरसे प्रकाशित की जाती हैं। इस साल अभी तक पहले वर्गकी हिन्दी पाठ्य पुस्तक किसी भी स्कूल में लभ्य नहीं की गयी। हिन्दी अध्यापकोंमें एक बड़ा भाग आंशिक अवधिके लिए ही अध्यापकीय सेवामें है। उन्हें तनख्वाह भी बहुत कम मिलती है। इन सब कारणोंके फलस्वरूप विद्यार्थियोंको शुरूके सालोंमें हिन्दीमें अच्छी शिक्षा नहीं मिल पाती। इस कारण उनकी यह धारणा जड़ पकड़ती जा रही है कि हिन्दी एक कठिन भाषा है, और हिन्दीके कारण ही वे परीक्षामें असफल होते हैं।

हिन्दी अध्यापनकी इस चिन्तनीय स्थितिके साथ ही यह भी प्रचार किया जा रहा है कि हिन्दी जब प्रशासन की भाषा बन जायेगी, तब यहांके लोगोंको केन्द्रीय सरकार में और भिलाई, राउरकेला आदि जगहोंमें काम मिलना दूभर हो जायेगा। ऐसे वातावरणमें दक्षिणके लोग सोचते हैं कि अंग्रेजीके बलपर वे और किसी प्रान्तकी जनताकी बराबरी कर सकेंगे; और हिन्दी जिनकी मातृभाषा है, उनकी बराबरी हिन्दीमें लिखकर और बोलकर करनेका साहस यदि उनमें नहीं है, तो इसमें आश्चर्यकी क्या बात?

मतलब यह है कि केरलमें जो हिन्दी विद्वेष अभी-अभी पनपने लगा है, उसकी जड़में मातृभाषा-प्रेम बिल्कुल नहीं है; जो है, वह है अंग्रेजी-मोह। अगर इस विद्वेषको यहीं खतम करना है तो उसके लिए अभीसे काम शुरू होना चाहिए। मेरी रायमें निम्नलिखित बातोंपर गौर करना होगा :

(१) केरलकी प्रशासन-भाषाके पदपर मलयालमको प्रतिष्ठित करनेका कदम तुरन्त उठाया जाना चाहिए। केरलमें ही नहीं, सभी राज्योंमें प्रादेशिक भाषाको प्रशासनिक भाषा बनानेमें अब विलम्ब नहीं होना चाहिए।

• शेष पृष्ठ ३४ पर →

क्योंकि [illegible] कट्टर [illegible] से मानते थे [illegible] अरब में स्त्रियों को बुर्का या चादर पहनना अनिवार्य होता है, इसे किसी मजहब की [illegible] केरल में एक ईसाई स्कूल में जनगणमन प्रार्थना पर धार्मिक आक्षेप लिया गया।

पर क्या यह उचित है? ईरान में पढ़ी-लिखी मुस्लिम महिलाएं, लेबनान में मुस्लिम स्त्रियां, और अब पाकिस्तान की एथलेटिक्स में भाग लेने वाली लड़कियां क्या सिर पर [illegible] बांधती हैं? सोवियत रूस में तो मूल मुस्लिम हो या यहूदी या ईसाई स्त्रियां किसी तरह का बुर्का नहीं करती है न सिर ढकती है। बेगम नुसरत भुट्टो के या बंगलादेश की मुस्लिम राजनेत्रियों के छायाचित्रों में कई बिना सिर ढंके हुए चित्र हैं। तो क्या इस कारण से वे कम मुस्लिम हुई?

में बैठी थी। मुस्लिम यूनिवर्सिटी की मुस्लिम विद्यार्थिनियां विंग में बैठी थीं अलग, चिलमन के पीछे। उनमें से कइयों ने बुर्का ओढ़ा था, पर चेहरा खुला रखा था। एक ही धर्म के अनुयायियों में प्राचीन और नवीन का यह अंतर देखकर आश्चर्य हुआ।

परंतु इस समाचार से यही निष्कर्ष निकलता है कि विज्ञान कितना ही आधुनिक हमें बना दे, हमारे मन में बुनियाद- परस्ती (फंडामेंटालिज्म) जड़ शिला की तरह बैठी है। वह जल्दी से खत्म नहीं होती। कमाल अतातुर्क ने तुर्की में रातोरात दाढ़ी हटा दी, टोपी पहना दी, रोमन लिपि कर डाली। पर ऐसे सुधार को अब खोमेनी मौत की सजा दे देंगे। शहाबुद्दीन फांसी पर लटका देंगे।

(ख) एल.वी. कृष्ण वारीयर

हम इंदौर क्रिश्चियन कॉलेज के विद्यार्थी १९३४ में दक्षिण भारत से आए हिंदी प्रचारकों से बहुत प्रभावित हुए थे, जिनमें एक दुबले- पतले संस्कृत विद्वान युवक थे कृष्ण वारीयर। त्रिशूर जिले में [illegible] में १३ मई १९१६ को जन्मे 'एन.वी.' केरल के सबसे अधिक बिकने वाले दैनिक 'मातृभूमि' के और [illegible] साप्ताहिक के प्रमुख संपादक थे, १९७९ से पहले वे 'मातृभूमि' के [illegible] संपादक रहे (१९५० से १९६८ तक)। एम.ए. एम. लिट् (मद्रास), साहित्य शिरोमणि, व्याकरण-भूषणम, राष्ट्रभाषा विशारद। वारीयर ने [illegible] के संस्कृत हाईस्कूल के हेडमास्टर की तरह अपना कार्य शुरू किया। फिर मलयालम के व्याख्याता बने केरल वर्मा कॉलेज त्रिशूर में। केरल सरकार के भाषा संस्थान के संचालक रहे, १९६८ से १९७५ तक। आप मुख्यतः [illegible] कवि और संपादक के नाते विख्यात थे। मराठी बंगाली, कई भाषाएं जानते थे। उत्तम वक्ता थे।

आपकी तीस पुस्तकें मलयालम में हैं। केरल साहित्य अकादेमी ने १९६७ और १९७९ में आपको पुरस्कृत किया। १९७१ में आपको सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार मिला, 'वल्लत्तोलिंटे काव्य शिल्पम्' (समीक्षा) को साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला। १९७९ में आपकी एक पुस्तक अंग्रेजी में है 'मलयालम छंदों का इतिहास'। प्रमुख पुस्तकें हैं- 'चील कवितकल' (कुछ कविताएं) (१९४७) कुरेक्कुटि नील कवितकल (कुछ और कविताएं, १९५१) यह शीर्षक मराठी के कवि मर्ढेकर की 'काही कविता' (१९४१), 'आणखी काही कविता' (१९४६) से लिया गया है। इसी नाम के शमशेर के संग्रह बहुत बाद के हैं। वारीयर का पहला कविता- संग्रह 'वसावर' (१९४३) और अंतिम प्रसिद्ध कविता संग्रह था 'गांधीयुम् गोडसेयुम्' (१९६७)। अपने [illegible] 'देवदास' और 'काशीनाथ' के अनुवाद मलयालम में १९४७ में किए और जर्मन कथाओं के अनुवाद १९४९ में। वे जर्मन भाषा भी जानते थे। भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार की मलयालम सलाहकारी परिषद् में वे थे। पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार जी. शंकर कुरुप्प को दिलाने में उनका बड़ा योगदान था, ए.के. दामोदरन ने कहा। उन्होंने ही हमसे गतवर्ष मातृभूमि वार्षिकी में नेहरू पर विशेष लेख लिखवाया।

१२ अक्टूबर को उनके निधन पर ई.एम.एस. नंबूदिरीपाद ने उन्हें श्रद्धांजलि दी और कहा कि वे कई नए लेखकों को आगे लाए। न्यायमूर्ति एराडी, कांग्रेस (एस) के उन्नीकृष्णन, पूर्व मुख्यमंत्री करुणाकरन ने उन्हें आदरांजलि दी। वारीयर के परिवारकों को हार्दिक सहानुभूति।